बृहत सचित्र

# श्री गया महात्म्य कथा

गया गाईड **सोलह अध्याय** बुद्धगया महात्म्य सहित

प्रकाशक—बाबू माधोप्रसाद गौरीशंकरप्रसाद बुक्सेलर,
पचमहला गया। मूल्य ।≡) आना

श्री गणेशाय नमः

# श्री गया महात्म्य कथा

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णु भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

## प्रथम अध्याय

सूत जी सौनक जी से बोले कि एक समय नारद जी शौनकादि ऋषियों के साथ सनत्कुमार के पास गये और प्रणाम कर पूछा कि हे सनत्कुमार जी! कोई ऐसे तीर्थ की कथा सुनाईये जो मुक्तिदायक हो और जिसका महात्म्य सुनने से मुक्ति प्राप्ति हो। तब सनत्कुमार बोले कि हे नारद! ऐसा तीर्थ तो गया ही है, ऐसी पवित्र भूमि है कि जहाँ श्राद्ध और पिण्डदान करने से मुक्ति प्राप्त होती है। एक समय गयासुर नामक दैत्य बड़ा बली उत्पन्न हुआ उसके ऊपर ब्रह्मा ने धर्म शिला रखकर यज्ञ किया। इस शिला के अचल होने के निमित्त विष्णु भगवान् गदाधर नाम से गदा लेकर उपस्थित हुए और सब देवता फल्गु का स्वरूप धारण करके आ विराजे। ब्रह्मा ने यज्ञ करके ब्राह्मणों को गृह, रत्न, स्वर्ण आदि दान दियो तभी से यह पुरी पवित्र हो गई। वहीं पितर सदैव वास करते हैं और हरदम यही आशा करते हैं कि हमारे कुलमें कोई ऐसा उत्पन्न होय जो यहाँ आकर पिंड दे जिससे हम लोगों की मुक्ति हो। गया में पुत्र के जानेसे और फल्गु नदी में स्पर्श करने मात्र से पितरों का स्वर्गवास होता है। गया क्षेत्र में तिल युक्त समीपत्र के प्रमाण पिंड देने से भी पितरों को अक्षय लोक प्राप्त होता है। गयाक्षेत्र में अपने निमित्तविना तिल का पिंडदान देने से ब्रह्महत्या. सुरापान इत्यादि घोर पापों से मुक्ति होता है। गया में जान पहचान वाले मृत मनुष्य का नाम लेकर पिंडदान देने से उसकी भी मुक्ति होती है। गया में पिंडदान करने से कोटि तीर्थ और अश्वमेघ यज्ञादि

का फल मिलता है। गया में श्राद्ध करने वालेको किसी काल का विचार नहीं करना चाहिये गया में मृत्यु होने से मुक्ति होती है क्योंकि यह भी सप्तपुरी में से एक पुरी है। गया में ब्राह्मण भोजनकराने से पितरों को तृप्ति होती है। गया में मुण्डन कराने से सकुल वैकुण्ठ को जाते हैं। गया में जाकर विष्णुभगवान (गदाधर) का स्मरणकर पितरों का आवाहन कर श्राद्ध युक्त होकर श्राद्ध करे। गया में श्राद्ध करते देखकर पित्र नहीं भी होने पर झट गया में पहुँच जाते हैं। गया में पिण्डदान करनेके निमित्त जाकर काम, क्रोध को त्याग देवे। गयाक्षेत्र में सब जगह तीर्थ विराजमान हैं। इससे गयाक्षेत्र सब तीर्थों से श्रेष्ठ गिना जाता है। जो मनुष्य मीन, मेष, कन्या, धन, कुम्भ, मकर में सूर्यग्रहण, चन्द्र-ग्रहण में तथा अमावास्या सोमवती को पिण्डदान करता है
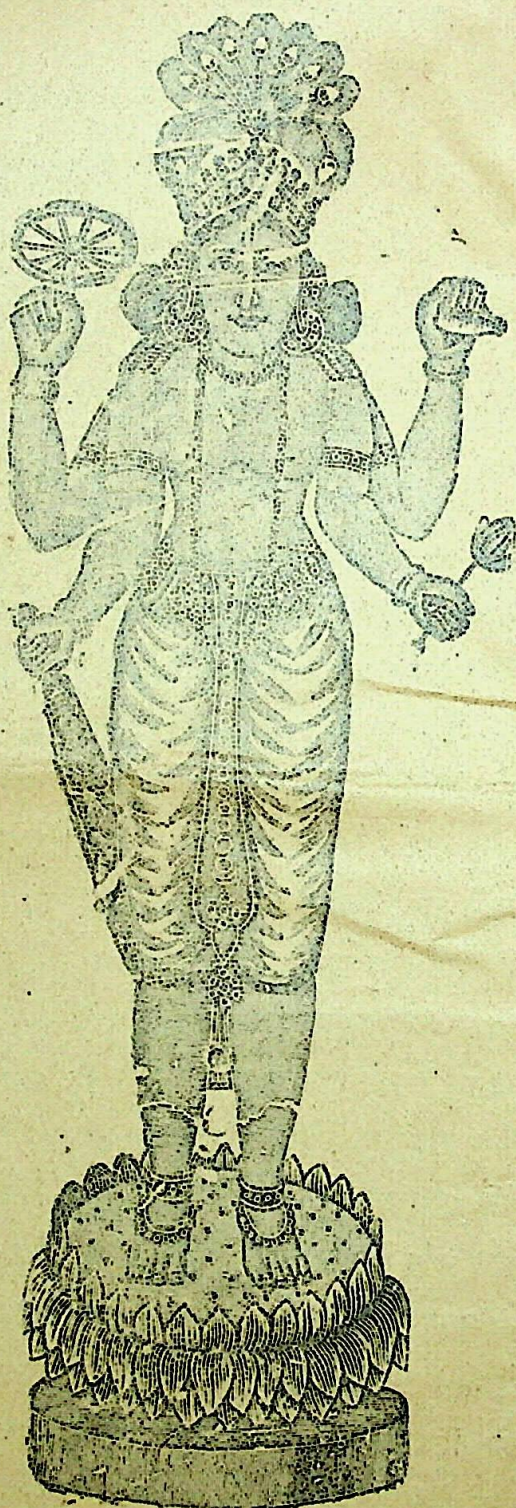
गदाधर भगवान

उसको महान् पुण्य होता है, जिसमें कन्या के सूर्य में पिण्डदान करनेका बड़ा माहात्म्य है। इतना कहकर सनत्कुमार बोले हे नारद! मैं गयाक्षेत्र के
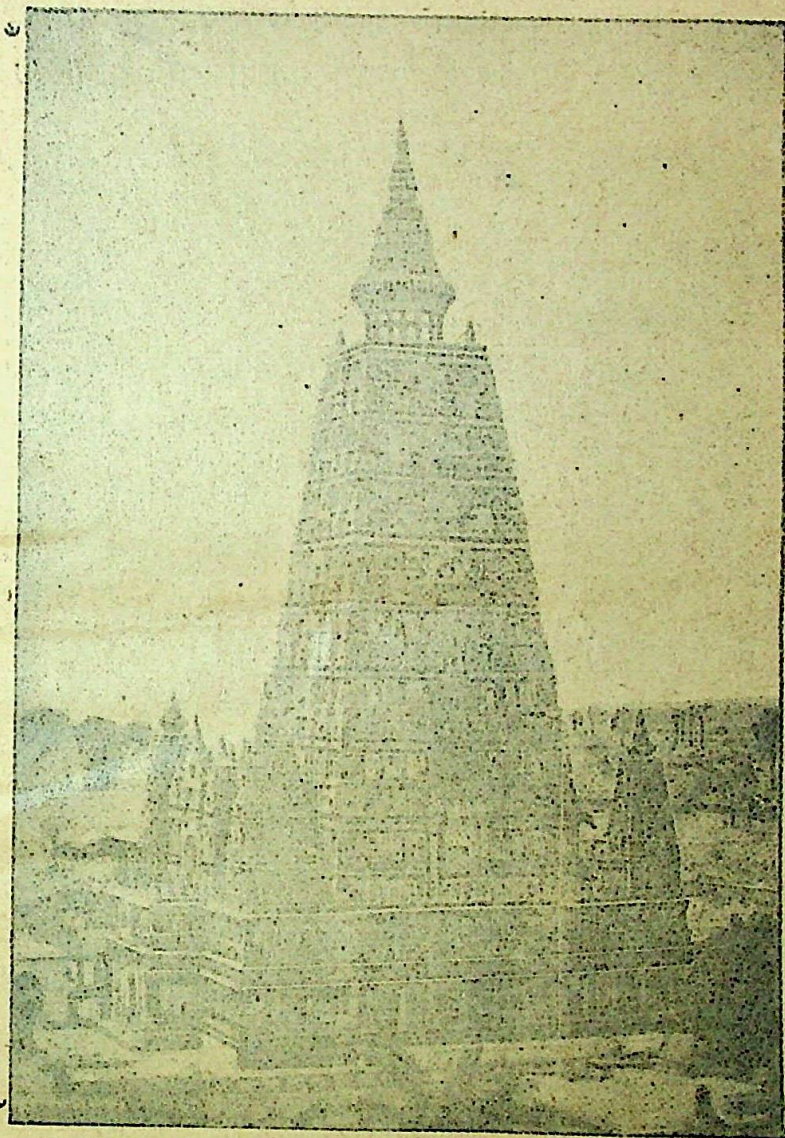
बुद्ध गया

माहात्म्य का कोटि कल्प वर्णन नहीं कर सकता। इति श्रीवायुपुराणेश्वेतवाराह-कल्पे गया महात्म्ये कथा प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

# दूसरा अध्याय

इतनी कथा सुन नारदजी सनत्कुमारसे बोले-हे महाराज ! कृपाकर गयासुर की उत्पत्ति का वृतान्त मुझसे कहिये, वह ऐसा पवित्र कैसे हुआ कि उस पर स्वयं ब्रह्माने यज्ञ किया ! इस प्रश्न को सुनकर सनत्कुमार बोले हे-नारद ! एक
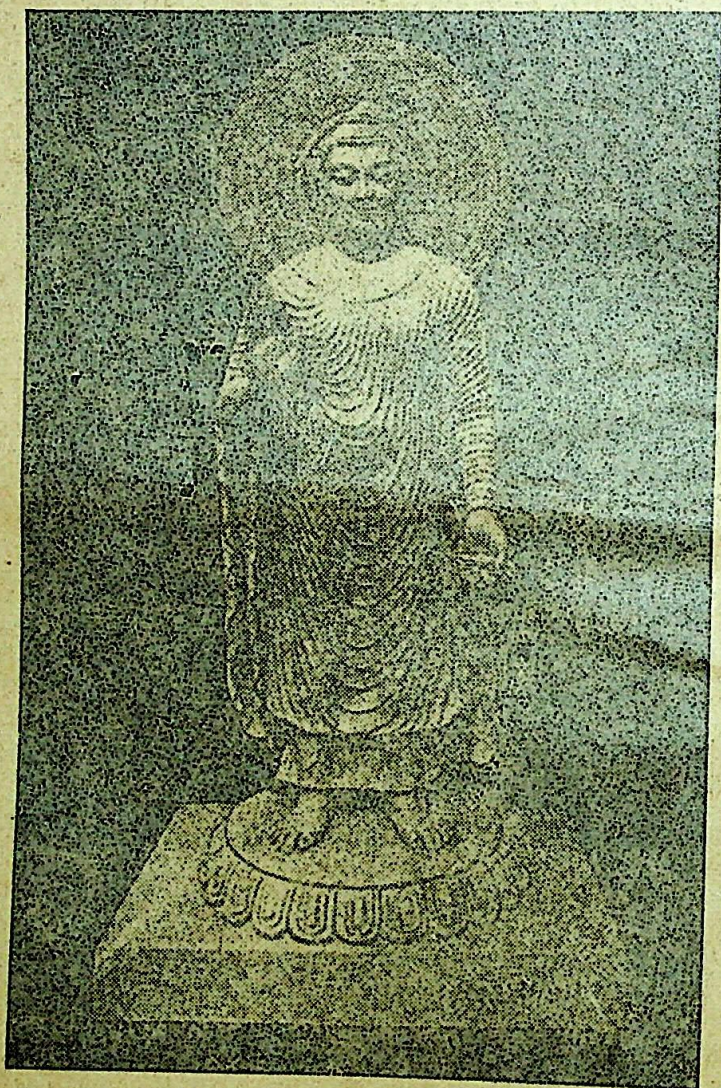
भगवान बुद्धदेव

समय स्वयं ब्रह्मा सृष्टि रचते समय गयासुरको उत्पन्न किया। उसने कोलाहल पर्वतपर जाकर घोर तपस्या किया और बहुत दिनों तक स्वांस रोक कर खड़ा रहा। उसकी ऐसी तपस्या देखकर इन्द्र घबराया कि कहीं मेरा सिंहासन न ले ले।

ऐसा विचार, सब देवताओं को ले ब्रह्मा के पास गया और सब वृतान्त कहा। ब्रह्मा बोले अच्छा चलो शिवजी से राय लेना चाहिये। तब सब कोई शिवजीके पास गये। महादेवजी ने सब देवता को साथ लिया और विष्णु के पास गये और प्रणाम कर स्तुति किया। तब विष्णु भगवानने सब देवताओंसे पूछा कि हे देवता लोग! आप किस कारण यहाँ आये? तब सब देवता बोले कि हे नारायण! गयासुरनामक एकभारी दैत्य उत्पन्न हुआ और उसने घोर तपस्याकी। सो हे नाथ! ऐसा वरदान देकर हमसबकी रक्षा कीजिये! तब विष्णुभगवान बोले-तुमलोग उसके पास चलो, मैं गरुड़पर चढ़कर वहाँ आता हूँ। सब देवताओंके चले जाने के बाद विष्णु भगवान गरुड़ पर चढ़कर गयासुरके पास आये और आंखसे उसका शरीर स्पर्शकर बोले कि हे दैत्यराज! तुम्हारी उग्र तपस्या देखकर हम अतिप्रसन्न हैं और तुमको वरदान देनेके लिए आये हैं, वर मांगो। यह सुन गयासुरबोला कि हे प्रभु! यदि आपलोग मुझपर प्रसन्न हैं और वरदेने आये हैं तो दयाकर यह वर दीजिये कि मेरे स्पर्श से यावतसुर, असुर कीट, पतंग, पापी, ऋषि, मुनि, प्रेत यह सभी पवित्रहोकर मुक्तिको प्राप्तहोय। उसकेवरदान-को सुनकर विष्णुभगवान एवमस्तु कहकर सब देवता सहित निज आश्रम को चले गये। उसी दिनसे गयासुर के दर्शन और स्पर्शसे सभी जीव मुक्तिको प्राप्त होनेलगे और बैकुण्ठको जाने लगे। धीरे धीरे यमपुरी जनशून्य हो गयी। तब यमराज इन्द्रादि देवतासहित ब्रह्माको लेकरबिष्णुभगवान के पास गये और बोले हे दीनबन्धु! गयासुर के स्पर्श से सब वैकुण्ठको चले गये और यमपुरी जनशून्य हो गई। यमराज को ऐसी विनती सुन विष्णु भगवान बोले कि हे ब्रह्मा! आप गयासुर के समीप जाकर यज्ञार्थ उसका शरीर मांगिये। विष्णु की अज्ञा पा ब्रह्मा जब गयासुर के पास गये तब असुर प्रणाम करके बोला हे प्रभु आप मेरे समीप किस लिये आये सो कृपाकर कहिये तब ब्रह्माने कहा कि हे दैत्यराज! मैं तमाम पृथ्वी पर घूम आया और मुझे यज्ञ करने के निमित्त कोई भी पवित्र स्थान न मिला इस वास्ते मैं तेरे पास आया हूँ कि तेरा शरीर नारायण के वरदान से पवित्र है सो अपना शरीर मुझे यज्ञ के हेतु दे। ब्रह्मा का ऐसा वचन सुन गयासुर अतिहर्षसे बोला हे नाथ! आपही

लोगों की कृपासे यह मेरा अधम शरीर पवित्र हुआ है सो आप इस पर यज्ञ अवश्य करिये जिससे यह और भी पवित्र होजाय । ॥२॥

---

## तीसरा अध्याय

सनत्कुमार बोले हे नारद ! उसी समय गयासुर उत्तर दिशाकी तरफ शिर करके सोगया तब ब्रह्माने सम्पूर्णऋषि और मुनिको बुलाकर गयासुरकेऊपरयज्ञारंभ किया, यज्ञके समाप्त होने पर सबके साथ ब्रह्मा यज्ञान्तस्नान करनेमें ब्रह्मसरपरउपस्थितहुए । उसीसमय गयासुर का शरीर हिलने लगा, तब ब्रह्माजी
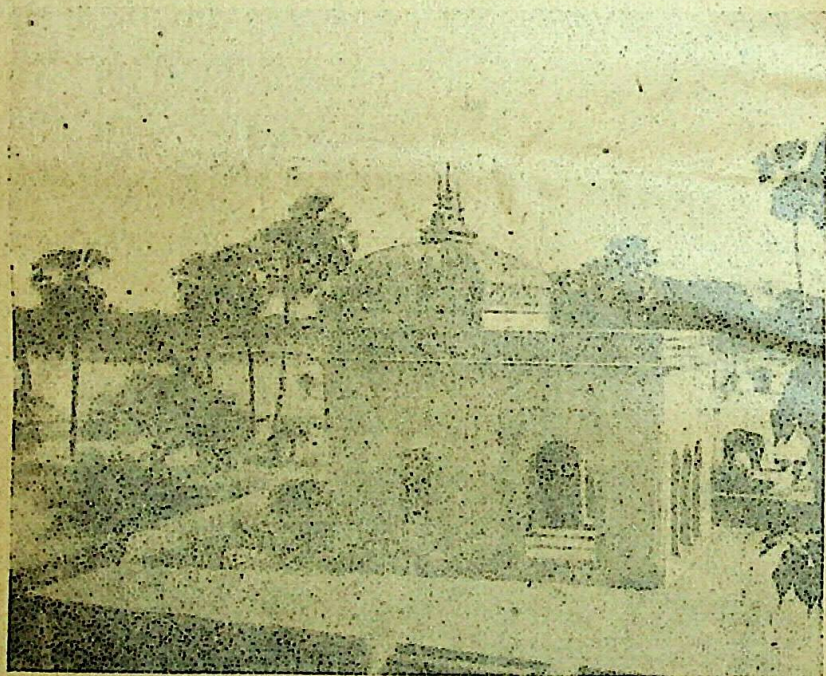
धर्माण्य

धर्म राज से बोले कि हे धर्मराज ! आपके यहाँ जो देवमयी शिला है उसको लाकर इसके सिर पर रख दीजिये । उस शिला के रखने पर भी जो असुर स्थिर न हुआ तब ब्रह्माजी फिर सब देवताओं को साथ लेकर विष्णु के पास गये । तब नारायण ने पूछा कि तुम लोग किस लिये आये हो सो कहो, तब

ब्रह्मा ने सम्पूर्ण हाल विष्णु से कहा और विनयपूर्वक कहा कि हेनाथ! कोई ऐसा यत्न बताइये जिससे असुर स्थिर हो। तब नारायण ने अपने शरीर में से एक विष्णुमूर्ति निकाल कर दी! परंतु मूर्ति लेकर रखने पर भी असुर स्थिर न हुआ। तब ब्रह्माने साक्षात् विष्णुका आवाहन किया। तब भगवान उस शिला पर गदा लेकर आ बिराजे और ब्रह्मा भी पाँच रूपसे प्रपितामह, पितामह फलवाबीस केदार कनकेश्वर होकर स्थित हुए और गजरूप धारण करके गणेशजी गयादित्य नामसेदक्षिणायण उत्तरायण सूर्य शांतनामसे लक्ष्मी और सावित्री, त्रिसंध्या नामसे, सरस्वती, इन्द्र बृहस्पति वसु यक्ष, गन्धर्व और सपूर्ण देवता अपनी अपनी शक्तिसे गयासुर के देह पर स्थिर हुए। तब गयासुर का हिलना बन्द हुआ, तभी से विष्णु को नाभ गदाधर हुआ, गयासुर के स्थित होने पर विष्णु भगवान ने कहा हे असुर! मैं तुमसे अति प्रसन्न हूँ बर मांग। तब गयासुर बोला हे नाथ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो यह वर दीजिये कि जब तक सूर्य चन्द्रमा पृथ्वी पर हैं तब तक मेरे ऊपर इस शिला पर सब देवता वर्तमान रहें और यह तीर्थ मेरे नाम से प्रसिद्ध हो। यहाँ स्नान तर्पन दान पुण्यकरने से मनुष्यों को सब तीर्थों से ज्यादा फल हो और गदाधर भगवान के दर्शन पूजन से मनुष्यों के हजार कुल तर जावें जिस जिस पितर के लिए यहाँ पिंडदान दिया जावे ब्रह्मलोक वासी हों और पापों से मुक्त हों। गयासुर का वचन सुन विष्णु भगवानने कहा कि ऐसा ही होगा? इसके उपरान्त ब्राह्मणों को बहुत सा द्रव्य दान देकर अयाच्य कर दिया। कुछ काल बीतने पर ब्राह्मणों ने द्रव्य याचकर धर्म यज्ञ किया, उसका धुआँ स्वर्ग को गया तब ब्रह्माने आकर उन ब्रह्मणों को शाप दिया मेरे अयाच्य कर देने पर भी तुम लोगों ने द्रव्य मांगा इससे तुम सदा दरिद्री रहोगे। यह दूध दही की नदियाँ जो हैं पानी हो जांय और यह स्वर्ण रत्नादिक के गृह जो हैं वह मिट्टी हो जांय व कल्पवृक्ष कामधेनु स्वर्ग को जावे। ब्रह्मा का ऐसा शाप सुन सब ब्राह्मण हाथ जोड़कर बोले कि हे प्रभो आपके दिए हुए सम्पूर्ण पदार्थों को आपने नष्ट कर दिया। अब कृपा कर हम लोगों के जीविकार्थ यत्न बताइये। यह सुन दया वश हो ब्रह्माजी बोले कि जब तक सूर्य चन्द्रमा

हैं तब तक तुम लोगों को जीविका के लिए यह क्षेत्र है ॥ जो कोई यात्री आवेगा तुमको अवश्य पूजेगा। इतनी कथा कहकर सनत्कुमारजी नारद से बोले कि गयासुर के नाभिकूप स्थान के समीप विराजा देवी का मन्दिर है वहाँ पर पिण्डदान करने से इक्कीस कुल की मुक्ति है और जो गयासुर के पाँव पर पिण्डदान करता है उसके सात कुल स्वर्ग को जाते हैं। इति श्रीवायुपुराणे श्वेतवाराहकल्पे गया महात्म्ये कथा तृतीयोऽध्याय ॥ ३ ॥

---

## चौथा अध्याय

इतनी कथा कह चुकने पर नारदजी ने सनत्कुमार से पुनः प्रश्न किया कि जो शिला गयासुर के ऊपर रक्खी गई वह धर्म राज के घर कैसे गई। इसका

अक्षय वट

वृतान्त कृपापूर्वक कहिये। यह सुन सनत्कुमार बोले कि हे नारद! वह शिला

धर्मराज की पुत्री थी। पूर्वकाल में विश्वरूप नामी स्त्री से धर्मराज को एक कन्या उत्पन्न हुई। जब वह विवाह के योग्य हुई तब धर्मराज ने योग्य वर ढूँढा परन्तु कोई उत्तम वर न मिला तो कन्या को आज्ञा दिया कि तुम स्वयम्बर प्राप्ति के निमित्त तपस्या करो। पिता की आज्ञा पाकर धर्मव्रता पति के लिये वन में घोर तप करने लगी। तप करती कन्या को मरीचि ने देखा और उससे पूछा कि तू कौन है और ऐसा घोर तप क्यों करती? मरीचि का वाक्य सुन धर्मव्रता बोली। मैं धर्मव्रता नाम धर्म की कन्या हूँ और पति के निमित्त वन में तप करती हूँ। उसका ऐसा उत्तर सुन मरीचि बोले हे सुन्दरी! मैं ब्रह्मा का मानस पुत्र हूँ और मैं भी एक अच्छी स्त्री से विवाह करने के निमित्त घूम रहा हूँ सो परमेश्वर की कृपा से हमारा और तेरा संयोग आ मिला है, सो तू मुझसे विवाह कर ले। यह सुन धर्मव्रता बोली कि आप मेरे पिता धर्म के पास जाइये। यह सुन मरीचि धर्म के पास गये। मरीचि को धर्म राज ने अर्घपाद्य दे सन्तुष्ट किया। मरीचि बोले—हे धर्मराज! हम विवाह के हेतु तमाम पृथ्वी घूम आये मगर आपकी कन्या ही इस योग्य हमको मिली। इसलिये आप उस कन्या को हमें देकर हमारा मनोर्थ पूर्ण कीजिये। धर्मराज ने मरीचि की बात स्वीकार कर ली और कन्या को बुलाकर विधिपूर्वक उसके साथ विवाह कर दिया। मरीचि उस स्त्री को लेकर निजआश्रम को आये और आनन्दपूर्वक रहने लगे। इति श्रीवायुपुराणश्वेतबाराहकल्पेगयामहात्मेकथा चतुर्थोऽध्याय ॥४॥

---

## पाँचवाँ अध्याय

इतनी कथा सुन नारद ने सनत्कुमार से पूछा—हे मुनि! मरीचि ने धर्मव्रता को क्यों श्राप दिया। सन्तकुमार बोले कि हे नारद कुछ काल के उपरान्त मरीचि कहीं से थके हुए आये और स्त्री से बोले—मैं थक गया हूँ इससे मैं शयन करता हूँ, तू मेरा चरण (पाँव) दबा। धर्मव्रता मरीचि की आज्ञानुसार पाँव दबाने लगी और मरीचि सो गये। अभी कुछ ही समय बीता था कि मरीचि के पिता ब्रह्मा वहाँ आ उपस्थित हुये। तब धर्मव्रता बड़े संकट में पड़ी और विचार करने लगी कि मैं किसकी सेवा करूँ। इधर पति की आज्ञा भंग होती है उधर ससुरका अपमान होता है। यह विचार धर्मव्रता ने ब्रह्मा की सेवा करना ही उत्तम समझा और पति की सेवा छोड़ ब्रह्मा का सन्मान करने लगी। उसी समय मरीचि जागे और स्त्री को समीप न देखकर क्रोध में आकर शाप दिया कि मेरी आज्ञा को

तू ने भंग किया है इससे तू शिला हो जा! यह श्राप सुनकर धर्मव्रता बोली कि हे पति आपके सो जाने के बाद ब्रह्माजी आये जिनकी सेवा आपको करनी थी। परन्तु आप सोते थे इससे मैंने किया और आपने मुझे निरपराध श्राप दिया इससे मैं भी तुम्हें श्राप देती हूँ कि महादेवजी से तुम्हें भी श्राप मिले। श्राप देकर धर्मव्रता जलकर गार्हपत्य विधि से तप करने लगी और मरीचि भी श्राप पाकर तप करने लगे। धर्मव्रता के तप से इन्द्रादिक देवता घबड़ाकर नारायण के पास गये और बोले हे प्रभो! पतिव्रता के तपोतेज से हम लोग व्याकुल हो रहे हैं रक्षा कीजिये। यह सुन विष्णु भगवान धर्मव्रता के पास जा बोले तेरे तप से प्रसन्न हूँ। वर माँग! तब धर्मव्रता बोली कि मैं पति के श्राप से मुक्त हो जाऊँ। यह सुन भगवान बोले कि सुव्रते! परम ऋषि के दिये श्रापको कोई नहीं
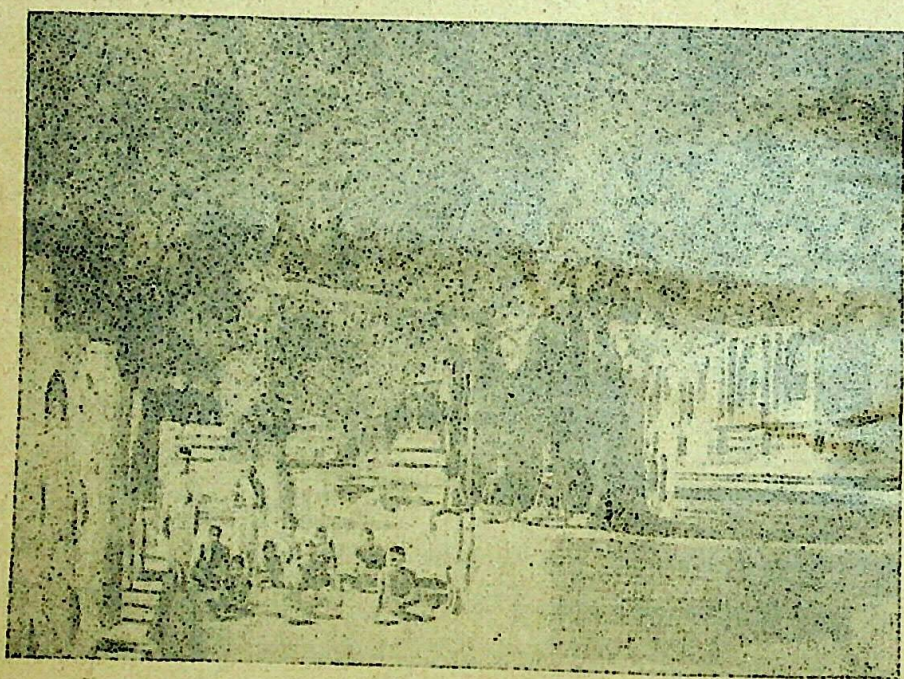
वृद्धवट वृक्ष

छुड़ा सकता तुम ऐसा बरदान माँगो जिससे संसार की मर्यादा बनी रहे। तब धर्मव्रता बोली कि अब आप यह बरदान दीजिये कि अति पवित्र शिला गिनी जाऊँ। और मुझ पर संपूर्ण देवता और तीर्थों का वास हो जिससे मनुष्य स्नान दान करने से पितरों को मुक्त कर सके और जो कोई मनुष्य या पशु पक्षी शरीर त्यागे वह बैकुंठ जाय। और कोई मेरे ऊपर कोई कर्म करे वह अक्षय होवे जो धर्मव्रता के बचन को सुनकर सब देवता सहित विष्णु भगवान ने एव-

मस्तु कह कर वरदान दिया और कहा कि जिस समय तूँ गयासुर के सिर पर रखी जायगी उस समय हम लोग तुम पर स्थिर होंगे। यह वरदान देकर सब देवता विष्णु सहित निज स्थान को चले गये। इति श्रीवायुपुराण श्वेतवाराह कल्पे गया महात्म्ये कथा पंचमोऽध्याय।

---

## छठा अध्याय

इतनी कथा कहकर सनत्कुमार बोले हे नारद! अब मैं तुमसे इस शिला के महात्म्य का वर्णन करता हूँ। जब वरदान पाके शिला अति पवित्र हो गई तब उसके स्पर्श और दर्शन मात्र से जीवों की मुक्ति होने लगी। और यमपुरखाली हो चुकी। तब घबड़ाकर यमराज ब्रह्मलोक में गये कि महाराज आप अपना अधिकार ले लीजिये क्योंकि धर्म्मव्रता के महात्म्य से अब यमपुर में कोई काम नहीं रहा इससे खाली कब तक बैठे रहें या कृपाकर कोई उपाय बतलाइये तब ब्रह्मा बोले—कि हे धर्मराज तुम शिला को उठाकर अपने घर में रख दो। ब्रह्मा की आज्ञा पाकर यमराज शिला को उठाकर अपने घर में रख दिया। वही शिला फिर गयासुर के ऊपर रक्खी गई तब से सब पितरों को मोक्ष मिलने लगा। शिला रखने के कारणगयासुर के सिर और पीठ का नाम मुण्ड- पृष्ठा पड़ा। उस शिला को प्रभात पर्वत ने ढँक लिया फिर सूर्य नारायण ने प्रकट किया इसी से प्रभाश नाम पड़ा। शिला को छेद करके एक अंगूठा निकला इससे इस स्थान को प्रेत शिला कहते हैं। जिस स्थान पर रामचन्द्र ने स्नान किया था उसका नाय राम तीर्थ कहा जाता है। राम तीर्थ में स्नान और पिंडदान करने से पितर यदि प्रेत भी हुए हों तो विष्णु लोक में जाते हैं। रामचन्द्र के बन जाने पर भरत ने आकर रामेश्वर की स्थापना किया और लक्ष्मण सीता ने मूर्त्ति स्थापित की। तभी से वह स्थान भरताश्रम कहा जाता है। वहाँ पर मतंगपद है। उस स्थान तर श्राद्ध करने से पितरों की मुक्ति होती है। उसी पर्वत पर यमराज-धर्मराज स्थिर हैं वहाँ पर श्याम-वर्ण दो कुत्ते हैं। उनको बलिदे। दाहिनी तरफ कुंड पर्वत है भरताश्रम अति पवित्र से वरुण और चार रूप से रूद्र स्थित हैं। भरताश्रम अति पवित्र है वहाँ पर जो कुछ किया जाता है वह अक्षय होता है। जो गया में जाकर ब्रह्मा का दर्शन करते हैं उनके पिता, पितामह आदि परमगति को पाते हैं। शिला के बायें भाग पर अगस्त्य में उद्यन्त और उदयगिरी पर्वतों की स्थापित किया है वहाँ जाने मात्र से पितर

ब्रह्मपुरी जाते हैं। उस स्थान पर गन्धर्वों का वास है। उसी स्थान में नैमिषारण्य तीर्थ है उसी के निकट मृतिष्टक कुंड है, वहाँ कुछ काल तप करने से सिद्धि मिलती है। शिला के दाहिने यमराज ने भस्म कुट पर्वत स्थापित किया है वहीं पर बट बटेश्वररूप से ब्रह्मा स्थिर हैं। वहाँ नदी पर रुक्मिनी कुण्ड और कपिल नदी है जहाँ पर कपिलेश्वर विद्यमान हैं। उसी स्थान पर सोमवती अमावस्या के दिन जो श्राद्धतर्पण करता है उसके पितर अक्षयलोक को जाते हैं उसी के निकट सारस्वत कुण्ड है जिसके समीप पुत्र सहित शुक्राचार्य विराजमान हैं। वहीं पर गृद्ध कुट नामक पर्वत है। उस पर्वत पर ऋषियों ने तप किया। उसी से गृद्धेश्वर महादेव वहाँ पर स्थित हैं जिसके दर्शन से पितरों को शिवलोक मिलता है। जिसके मूल में पिंडदान करने से पितर स्वर्गलोक को जाते हैं। शिला का पट आदिपाल पर्वत से ढका है उसी पर विघ्नेश नाम से गनैशजी विराजमान हैं, जिनके दर्शन से सम्पूर्ण विघ्नों का नाश हो जाता है और पितर मोक्ष-गति को पाते हैं। गया में पदांकित कुंड पृष्ठा महादेवी निवासिना देवी के दर्श पूजन करने से संपूर्ण पापों का नाश हो जाता है। गया में च्यावन ऋषि का आश्रम, पुनपुन नदी और बैकुंठ लोक, दण्ड गृद्धकूट शोनक का आश्रम अति पवित्र है। जिसके दर्शन, श्राद्ध तर्पण करने से पितरों को ब्रह्मपुर प्राप्त होता है। गयामें क्रौंच-पद पर स्नान पिंड तर्पण करने और काक वली देने से इक्कीस कुल की गति होती है। गया में लो मिष ऋषि ने सम्पूर्ण नद नदियों का आवाहन किया है इन नदियों में स्नान पिंड करने से पितर स्वर्ग को जाते हैं। जो मनुष्य ब्रह्म योनि को लांघता है वह संसार के आवागमन से मुक्त होता है। और जो कोई भी मकूट पर दही से पिंडदान, विष्णु के हाथ पर, अपशव्य होकर करता है वह पितरों सहित विष्णुलोक को जाता है। उस पर सम्पूर्ण देवता सहित विष्णु भगवान स्थित हैं इसी से वह शिला देवमयी है।

इति श्रीवायुपुराणेश्वेतबाराहकल्पे गयामहात्मे, कथा षष्ठो अध्याय ॥ ६ ॥

---

## सातवाँ अध्याय

इतना सुन नारद ने सनत्कुमार से पूछा कि हे मुनि! यह बताइये कि गया-क्षेत्र में किस प्रकार गदाधर भगवान व्यक्त अव्यक्तस्वरूप से स्थित हैं और गदाधर नाम कैसे हुआ, इसका वृतान्त कहिये। सनत्कुमार बोले, हे नारद किसी समय गदा नाम एक असुर उत्पन्न हुआ था जिसका वज्र तुल्य हड्डी का विश्वकर्मा ने गदा बना कर स्वर्ग में रक्खा था। कुछ काल उपरान्त ब्रह्मा का पुत्र हेति नामक राक्षस उत्पन्न हुआ। उसने वायु भक्षण करने के लिये सौ हजार वर्ष एक अँगूठा से खड़ा होकर घोर तपस्या की। उसकी घोर तपस्या देख सब देवता वर देने को आये। तब दैत्य ने वर माँगा कि मैं देवता, दैत्य मनुष्य, विष्णु, शिव, इन्द्र, ब्रह्म, इत्यादि चक्र, शूल, शक्ति, बांण से अवध्य होऊँ। देवता एवमस्तु कहकर चले गये। तब दैत्य ने इन्द्र को युद्धकर
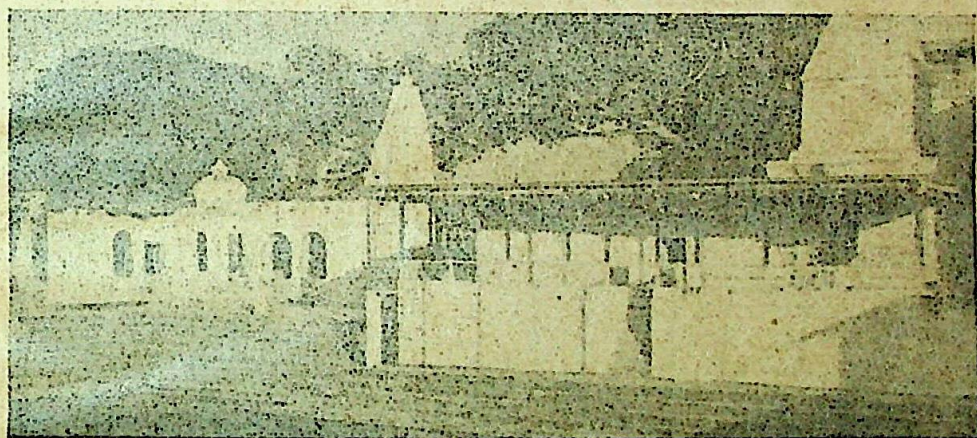
( उत्तर मानस )

जीत लिया और स्वयं इन्द्र बन बैठा। उस समय सब देवता भय भीत होकर नारायण के पास गये और प्रार्थना कर बोले, हे प्रभु हम लोगों को कोई शास्त्र दीजिये जिससेहम लोग दैत्य को मार सकें। तब नारायण बोले भाई वह मेरे शस्त्र से अवध्य है। उसी समय विश्वकर्मा ने वह गदा लाकर भगवान को दी। उस गदा को धारण करने से गदाधर कहलाये। विष्णु ने उसी गदा से असुर को मारा उसमें लगे रुधिर को जिस जलाशय में धोया वही स्थान गदालोल नामक तीर्थ हुआ। उसी गदा को लेकर विष्णु भगवान शिला पर स्थिर हुऐ। इसीसे आदि गदाधर नाम पड़ा। गया जी में, नदी, नद, पर्वत देवता यावत हैं, सब व्यक्तरूप से गदाधर रूप हैं। ॥ ७ ॥

इति श्री वायु पुराणेश्वेत बाराह कल्पे गया महात्मये कथा सप्तमो अध्याय

# आठवां अध्याय

हे नारद ! जब विष्णु भगवान गदा को धारण करके शिला पर स्थित हुए उस समय ब्रह्मा ने बहुत स्तुति की। तब विष्णु भगवान ने ब्रह्मा से कहा कि वर माँग। मैं बड़ा प्रसन्न हूँ। तब ब्रह्मा बोले हे प्रभु आप इस शिला पर निरन्तर वास करें। भगवान एवमस्तु कह कर बोले हे ब्रह्मा जो पुरुष यहाँ आकर मेरा दर्शन पूजन करेगा वह बड़ा आयुष्य को भोगेगा और उसकी कीर्ति प्रसिद्ध होगी और पुत्र पौत्रादिक के सुख को भोग करेगा। यहाँ पिंडदान करने से

रामशाला

पितर स्वर्गलोक को जाते हैं और पिण्डदान करनेवाला बैकुण्ठ को जाता है। इसके बाद महादेव ने भी नारायण की स्तुति की। तब आदि गदाधर भगवान शिला के मुण्ड पृष्ठ पर स्थित हुए। इतनी कथा कहकर सनत्कुमार बोले नारद इस महात्म्य को जो सुनेगा वह यथायोग्य मनोरथ को प्राप्त होगा और स्वर्ग को जायगा। इति श्रीवायुपुराणे श्वेत बाराह कल्पे गयामहात्म्ये कथा अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

# नवमों अध्याय

इतना कह सन्तकुमार बोले हे नारद ! अब मैं गया की यात्रा करने वाले की जो कार्य करके यात्रा करना चाहिये सो कहता हूँ। प्रथम घर पर मुण्डन कराकर पिण्डकर और अपने घर की प्रदक्षिणा कर ब्रह्मचर्य होकर गया को जाय। ऐसा करने वाले को पद पद पर अश्वमेध यज्ञ का फल होता है। गया में जाकर पूर्व तरफ की नदी में प्रथम स्नान कर देव पित्र-तर्पण और श्राद्ध कर दूसरे दिन प्रेत-पर्वत पर जाकर स्नान कर, तिल युक्त पितरों के निमित्त पिण्डदान करे। जब पितरों को पिंड दिया जाता है तो उसे राक्षस खाने के वास्ते आते हैं। इसी वास्ते उसे तिलयुक्त दान करना चाहिये जितने तिल पिंड के साथ खर्च होते हैं उतने ही असुर भयभीत होकर भागते हैं। पिंडदान करते वक्त
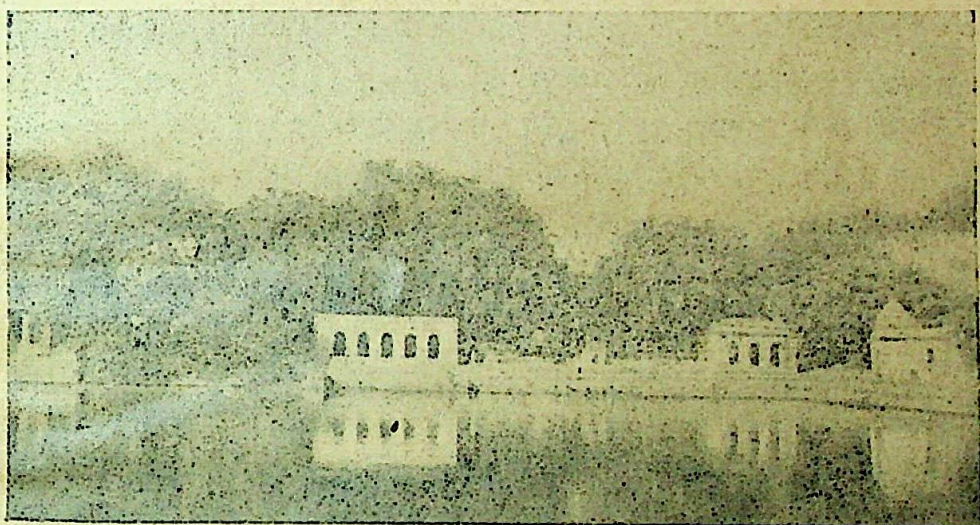
[ ब्रह्मसरोवर ]

प्रत्येक मृत मनुष्य का नाम लेता जाय। इस रीति से पिंडदान करने से सौ कूल का उद्धार होता है। इसके पीछे अग्नि से जले, जल में डूबे, सर्प से काटे, विष खाये, गिर कर मरे इत्यादि के अपमृत वालों का नाम लेकर पिंडदान करे। अन्त में यह कह कर पिंड दे कि जो कोई हमारे कुल, नर्क में पीड़ित हैं अथवा पशु योनी में हों उसके उद्धारार्थ यह पिंड है। फिर ब्रह्मा, विष्णु रुद्र इत्यादि देवताओं का नाम लेकर साक्षी दे कि आप लोग इसके साक्षी हैं। हमारा किया यह पिंडअमोघ होकर मेरे पितरों को स्वर्ग में प्राप्त हो और मेरे पितर मोक्ष हो जावें तो हे नारद उस प्राणी के पितृ जहाँ हों निश्चय स्वर्ग को जाते हैं। और जो कोई शिला गया के महात्म्य को पढ़ेगा और लोगों को सुनावेगा

उसको इस लोक में स्वर्ग प्राप्त होगा। इति श्रीवायुपुराणे श्वेतवाराह कल्पे गया महात्म्य कथा नवमोध्यायः ॥ ९ ॥

## दशमों अध्याय

सनत्कुमार बोले हे नारद! पुनीत गया क्षेत्र में अति पवित्र उत्तर मानस हैं वहाँ विधिपूर्वक स्नान कर श्राद्ध तर्पण करके सूर्य भगवान का पूजन कर वहाँ से मौन धारण कर के दक्षिण मानस सरोवर को जाय वहाँ पर तीन तीर्थ हैं उन तीनों में विधि पूर्वक स्नान कर के अलग श्राद्ध करे फिर उत्तर दिशा में मुक्ति देने वाला उदीच्यं तीर्थ है। जहाँ के स्नान से मनुष्य स्वर्ग को जाता है वहाँ पर कनखल में स्नान करे जिसके दक्षिण मानसरोवर में स्नान कर सूर्य नारायण को अर्घ देकर पूजन करै और स्तुति करै नमस्कार करै इसी प्रकार मैनाक अलगतीर्थ में स्नान करै पितर के मुक्ति के वास्ते मुख्य तीर्थ फल्गू है। फल्गू तीर्थ में स्नान करने से सम्पूर्ण तीर्थों के स्नान का पुण्य होता है। लाख अश्वमेध यज्ञ करने के बराबर फल्गू तीर्थ के स्नान का फल है। फल्गू तीर्थ में स्नान कर के गदाधर भगवान का पूजन करने से मनुष्य के ईकीस कुल तर जाते हैं। वहाँ पर पंच तीर्थ में स्नान करने से पितरों को ब्रह्म लोक प्राप्त होता है। वहाँ पर जो मनुष्य विष्णु भगवान का पञ्चामृत धूप नैवेद्य वस्त्र से पूजन करता है उसको गया फलवती होती हैं। गया के सब तिर्थों में फल्गू सबसे श्रेष्ठ है वहाँ का पिंड श्राद्ध अक्षय होकर पितरों को मुक्त कर देता है। हे नारद यह यात्रा का प्रथम दिन करना चाहिये। दूसरे दिन धर्मारण्य तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य को ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। मतंगतीर्थ जो पितरों को मुक्त करने वाला है उसी स्थान पर कूप के अन्य मतंगतीर्थ पर धाम वर और बटेश्वर का नाम लेकर पितरों की मुक्ति अर्थ नमस्कार कर और प्रार्थना करे कि मेरे कुल में जो कोई अधोगति को प्राप्त हुआ होय वह मुक्ति को प्राप्त होगा। नारद यह दूसरे दिन का कार्य हुआ। तीसरे दिन ब्रह्माशिर पर शास्त्रोक्त पितरों का श्राद्ध करे। कूप के मध्य पिंडदान करने से पितरों को ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। उसी कूप को ब्रह्माजीने गया में स्थित किया है। वहाँ श्राद्ध करने के उपरांत ब्रह्माकी स्तुति और कहे कि हे ब्रह्म देव हमारे पितरों को मोक्ष मिले। आगे गौर प्रचार के निकट ब्रह्माजी की लगायी आम्रवृक्ष है उसको नमस्कार करके जलसे सींचे हे नारद! एक मुनिने उसी आम वृक्ष के नीचे बगैर जाने सन्ध्या किया था तिसके प्रभाव से उसके पितर मुक्त हो गये थे तभी से आम्रवृक्ष का ऐसा माहात्म्य हो गया है तिसके पीछे यमबली देव और वैवस्वत कुलोत्पन्न दो कुत्ते हैं उनको बली दे। ॥ ९ ॥

# ग्यारहवाँ अध्याय

हे नारद यह तीसरे दिन का कृत्य हुआ। चौथे दिन फल्गू में स्नान कर गया शिर पर पिंडदान करे यह तीर्थ तीनों दिन के किये हुये स्नान से श्रेष्ठ गिना जाता है। यहाँ पर श्राद्ध करना अक्षय होता है मुण्डपृष्ठ तीर्थों के नीचे फल्गूतीर्थ हैं तहाँ गदाधर भगवान व्यक्त रूप से स्थित है वहाँ पर श्राद्ध दर्शन पूजन करने से पितरों को मुक्ति और पिंड करने से काल के सम्पूर्ण पापों का नाश होता है विष्णु पद पर श्राद्ध करने से एक हजार कल को स्वर्ग मिलता है। रुद्र पदपर श्राद्ध करने से एक हजार कैलाश प्राप्त होता है। ब्रह्म पद पर श्राद्ध करने से पितरों को बाजपेय, राजसूय, अश्वमेध ज्योतिष्टोम यज्ञ का फल प्राप्त होता है। जो यात्री थावास्थ्य पद शुक्त पद, नारदपद, अगस्तिपद, क्रौंच-पद, मतङ्गपद पर पिंड करते हैं उनके पितरों को इन्द्रलोक प्राप्त होता है सूर्यपद

फल्गू नदी

पर पिंड श्राद्ध करने में पितरों को नरक से मुक्ति होती है। कार्तिक पद गणेश पद पर श्राद्ध करने से पितरों को शिवपुर मिलता है। सब स्थानों से श्रेष्ठ कश्यप पद, विष्णुपद, रुद्रपद, ब्रह्मपद है। जिनका महात्म्य मैं तुमसे कहता हूँ ध्यान देकर सुनो। हे नारद एक समय भरद्वाज मुनि कश्यपपद पर श्राद्ध करने लगे ज्योंही पिंड वेदी पर धरने लगे तैसेही वेदी में से काले और सफेद दो हाथ निकले तब मुनिने विस्मित हो अपनी माता शान्ता से जाकर पूछा कि हे माता वेदी में से दो हाथ पिंड लेने के वास्ते निकले हैं। एक काला और दूसरा सफ़ेद सो किस हाथ में पिंड दूँ। तब उनकी माता शान्ता बोली कि हे पुत्र

तुम काले हाथ पर पिंड देओ। भरद्वाज जब काले हाथ पर पिंड देने लगे तब सफेद हाथ ने कहा तुम हमारे औरस पुत्र हो, काले ने कहा हमारा क्षेत्र है तब सफेद हाथ ने कहा यह स्वरिणी है तब काले ने कहा तुम क्षेत्र और वीर्य दोनों ही पर पिण्ड देवो। यह सुन भरद्वाज ने कश्यपपद पर पिण्ड दिया तिससे वह दोनों विमान पर चढ़कर स्वर्ग को चले गये। इतना कह कर सनत्कुमार बोले हे नारद! जब रामचन्द्र ने गया में पिण्ड देने गये तब दशरथ ने हाथ पसारा तब रामचन्द्र ने दशरथ के हाथ पर पिण्ड न देकर रुद्रपद पर पिण्ड दिया, तब दशरथ ने रामचन्द्र से कहा कि तुमने बहुत अच्छा किया, यदि तुम मेरे हाथ पर पिण्ड देते तो मेरी मुक्ति न होती अब तुम मेरे आशीर्वाद से चिरकाल तक राज्य सुख भोग कर स्वर्ग को जाओगे। इतना वर देकर दशरथ रुद्रलोक को चले गये। भीष्म पितामह जब पिण्ड देने लगे तब शान्तनु का हाथ निकला तब भीष्म ने भी वेदी पर पिण्ड दिया तब शान्तु ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया कि तुम्हारी मृत्यु तुम्हारे अधीन होगी और अन्त में तुम वैकुंठ को प्राप्त होगे। इतना कहकर शान्तनु वैकुंठ को चले गये। सनत्कुमार बोले हे नारद! कनक, केदार नरसिंह, बामन और रथमार्ग की पूजा करने से पितर तर जाते हैं। गयाशिर में कन्दमूल फलादिक से पिण्ड दान करने से पितरों को स्वर्ग प्राप्त होता है। यह मैंने तुमसे चौथे दिन का कृत्य कहा अब मैं तुमसे पाँचवें रोज का कृत्य कहता हूँ पाँचवें दिन पिण्ड करनेवाले को गदालोल पर जाकर स्नान करना चाहिये फिर पिण्डदान करे तो उसके सब पितर ब्रह्मलोक को जाते हैं। वहाँ पर ब्राह्मण भोजन अवश्य यथाशक्ति करावे फिर अक्षयवट के नीचे ब्राह्मण को भोजन कराने का अति फल है धर्म, पृष्ठ ब्रह्मशिर, अक्षयवट के नीचे पुरोहित का षोड़शो प्रकार से पूजन कर और सुफल ले। तिसके पीछे अक्षयवट की स्तुति करे। इस प्रकार से करने से पितर स्वर्ग को जाते हैं और पितरों के आशीर्वाद से श्राद्ध करनेवाला सुख पाता है और अन्त में स्वर्ग को जाता है। इति श्रीवायु पुराणे श्वेत बाराह कल्पे गया महात्म्य कथा एकादश अध्याय ॥ ११ ॥

## बारहवाँ अध्याय

इतना कह कर सनत्कुमार बोले हे नारद! जब गया राज ने गया जी में यज्ञ किया और अन्न और दूध का इतना दान दिया कि अन्न के ढेरी के सैकड़ों पर्वत प्रतीत होने लगे और द्रव्य का बड़ा भारी पर्वत हो गया, उसके यज्ञ से विष्णु आदि देवता प्रसन्न होकर वरदान देने को आये तब राजा ने यह वर-

दान मांगा ब्रह्मा से गया के ब्राह्मणों को जो श्राप मिला है वह श्राप इन लोगों का छूट जाय और यह लोग यज्ञ में पूजित होवें और यह पुरी नाम से प्रसिद्ध हो। ( तब से इस पुरी का नाम गया पड़ा ) यह सुन सब देवता सहित विष्णु एवमस्तु कह कर अन्तर्ध्यान हो गये। फिर सनत्कुमार ने कहा हे नारद ! विशालपुरी का विशाल नामक राजा, अपुत्र था राजा ने उन ब्राह्मणों की सभा करके यह प्रश्न किया कि आप लोग दया कर यह बतावें कि मुझे सन्तान कैसे उत्पन्न होगा तब ब्राह्मणों ने कहा कि तुम गया में जाकर पिंड श्राद्ध करो तो तुम्हारे सन्तान उत्पन्न होगा। राजा ने ब्राह्मणों की आज्ञा पा गया में जाकर श्राद्ध किया। पिंड देते ही श्वेत रक्त रूप के दो पुरुष प्रगट हुये। विशाल राजा
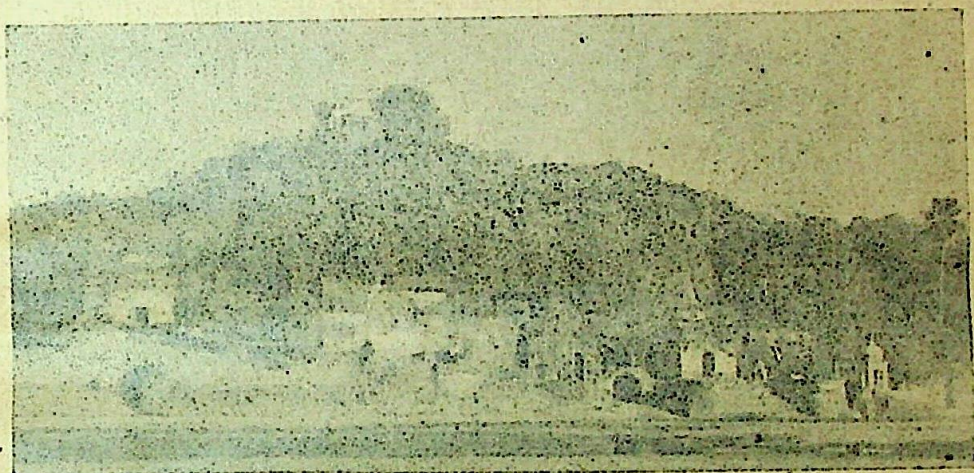
रामगया सीता कुंड

उनसे कहा आप लोग कौन हैं। श्वेत ने कहा तुम्हारा पिता हूँ। अब मुक्त होकर इन्द्रलोक जाता हूँ और श्वेत पुरुष तुम्हारे दादा इन्होंने अनेक ऋषियों को मारा था इससे यह घोर नरक में दुःख भोग रहे थे तुम्हारे गया में आकर पिंड दान करने से हम लोग मुक्त हो गये। अब तुम पुत्र पौत्रादिकों से युक्त हो सांसरिक सुख भोगकर स्वर्ग को जाओगे॥ पितरों के आशीर्वाद से राजा को कुछ काल में पुत्र उत्पन्न हुआ और विशाल राजा सुख भोग कर अन्त में स्वर्ग को गया॥ १२॥

## तेरहवाँ अध्याय

इतना कह कर सनत्कुमारजी बोले हे नारद ! एक प्रेत ने अपनी मुक्ति के लिये किसी बनिये से कहा कि हमारे अमुक स्थान में धन गड़ा हुआ है उसे खोद कर ग्यारह भागों को ले लो बाकी पाँच भागों से हमारा गया में जाकर

पिंड कर दो बनिये ने वैसाही किया इससे यह प्रेत योनि से मुक्त हो गया। इससे गया जी में सावित्री, सरस्वति तीर्थ में स्नान कर जो पिंड देते हैं उनके पितर स्वर्ग को जाते हैं। गया जी में जितने तीर्थ हैं वह सब पितरों को मोक्ष देने वाले हैं। गया में यमद्वार पर वैतरणी नदी है उनके पार होने के लिये एक गऊ दान करना चाहिये। एक समय महादेव जी पार्वती सहित वन में विहार करते थे उसी समय मरीचि ऋषि पुष्प लेने के लिये गये महादेव जी ने श्राप दिया कि तुम्हारी देह काली हैं जाय श्राप को सुनके मरीचि ने अनेकों प्रकार की स्तुति की तब शिवजी ने कहा वर माग तब मरीचि ने कहा श्राप से उद्धार कीजिये तब महादेव ने कहा कि गया में जाने से इस श्राप से मुक्त हो जावोगे। मरीचि ने गया में जाकर और पर्वत पर बैठकर बड़ी तपस्या की उस तपस्या
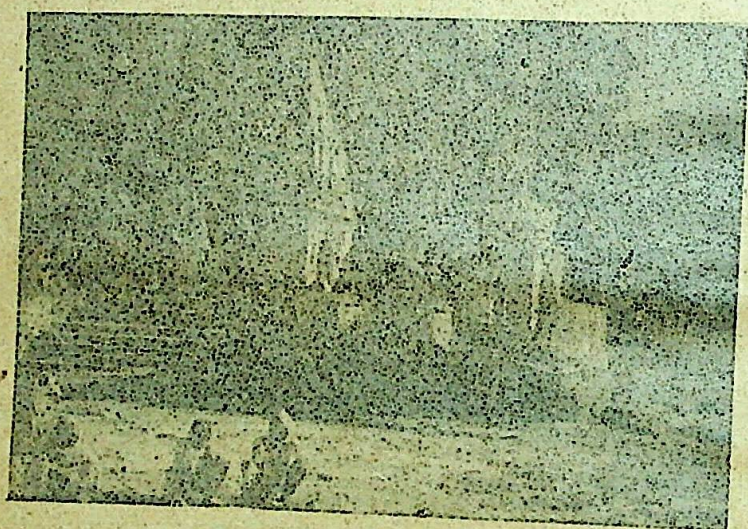
जिह्वालोल

देखकर ब्रह्मा विष्णु वरदान देने के लिये आये तब मरीचि ने कहा यदि आप लोग वरदान देते हैं तो यह दीजिये कि महादेव के श्राप से मेरी मुक्ति हो। ब्रह्मा विष्णु एवमस्तु कह कर अन्तर्ध्यान हो गये। मरीचि का शरीर पुनः श्याम से श्वेत होगया है। जब युधिष्ठिर गया में पिंड करने गये तब पिंड देते समय पांडु का हाथ निकला परन्तु युधिष्ठिर ने हाथ में न देकर पिंड को वेदी पर धर दिया तिसमें पिंड की मुक्ति हो गई और वह आशीर्वाद देते हुये स्वर्ग को चले गये। एक समय वशिष्ठ जी ने गया में अश्वमेध यज्ञ इष्ठि चक्र बनाया तिससे महादेव जी प्रसन्न होकर आये और बोले वर मांग ऐसा सुन वशिष्ठजी बोले यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो यह वर दीजिये कि आप यहां निरन्तर वास करिये तब महादेव ने एवमस्तु कहा तब से यह क्षेत्र और भी पवित्र हो गया।

हे नारद ! इस गया क्षेत्र में जो कुछ मनुष्य दान पुण्य करता है उसको अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है और पितर मुक्त हो जाते हैं। इस महात्म्य जो कोई पढ़ेगा या पढ़कर सुनावेगा उसका किया श्राद्ध पूर्ण होगा। इतनी कथा कहकर सनत्कुमार जी उस सभा से उठकर चले गयेऔर नारद जी भी दूसरे स्थान को चले गये। जो कोई गया महात्म्य को ब्राह्मण को दान करेगा उसको अन्त पुण्य प्राप्त होगा इसमें कुछ भी संदेन नहीं। इति वायु पुराने श्वेतवारह कल्पे गया महात्म्य कथातेरहवाँ अध्याय ॥ १३ ॥

## चौदहवाँ अध्याय

वायु पुराण गयासुर के नाम ही पर इसका तीर्थ नाम 'गया' रक्खा गया, इस असुर के पिता का नाम त्रिपुरासुर और इसकी धर्म परायणा पतिव्रता माता का नाम प्रभावती था। गयासुर बड़ा बलवान और दीर्घकार्य था। दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य से इसने वेद वेदांग, धर्म-शक्ति युद्ध और शास्त्र विद्याओं में पारद-र्शिता प्राप्त कर इसने कठोर तपस्या आरम्भ कर दिया। इसकी तपस्या से भगवान विष्णु ने प्रसन्न होकर वरदान दिया कि जो इसका दर्शन और स्पर्श करेंगे वे सीधे वैकुण्ठ जायेंगे। ऐसा होने पर यम और मर्त्य लोक शून्य होने लगा। ब्रह्मा विचलित हो सब देवताओं को साथ लेकर वैकुंठ में विष्णु के समीप गये और स्तुति कर कुल वृतान्त कह सुनाये भगवान ने सब देवताओं की स्तुति सुन कर ब्रह्मा जी से कहो कि आप गयासुर के पवित्र शरीर पर एक यज्ञ का अनु-ष्ठान करें। इतना सुन ब्रह्मा जी गयासुर के समीप आकर उससे यज्ञ के लिये उसका विशाल शरीर मांगा और प्रार्थना की कि उसके पवित्र शरीर के अति-रिक्त उनके यज्ञ की पूर्ति नहीं हो सकती। परम धार्मिमक परार्थपरायण गया-सुर ने ब्रह्मा की प्रार्थना पर अपना शरीर यज्ञ के लिये दे दिया और ब्रह्माजी ने भी उसके शरीर पर यच्च आरम्भ कर दिया। उसको दबाने के लिये देवताओं की चेष्टा और उद्देश्य था ही उन लोगों ने ( देवताओं ने ) अपनी शक्ति और बल के साथ उसके शरीर पर आ बसे तौ भी उसको दबा न सके, यज्ञ आरम्भ होते ही गयासुर का शरीर हिलने लगा तब देवताओं ने और ब्रह्माजी ने उसके सिर पर धर्मशिला की स्थापना की। ( कथा है कि ऋषि मरीचि की पत्नी धर्मव्रता बड़ी पतिव्रता स्त्री थी, एक दिन वह अपने पति का पांव दबा रही थी इसी अवसर पर ब्रह्मा जी ऋषि मरीची के पिता उसके ससुर वहीं आये, धर्म-व्रता अपने पति की पद सेवा को छोड़ कर ससुर की सेवा में लग गई। जब ऋषि मरीचि की निद्रा भंग हुई तो स्त्री को देखा कि उसने पाँव दबाना छोड़ दिया है इस पर क्रोधित हो श्राप दियो कि तू पत्थर हो जा। श्राप देते ही वह

परमात्मा को स्मरण करने लगी और पत्थर हो गई यह वही शिला है। इस शिला की स्थापना होने पर भी गयासुर का शरीर डोलने लगा। सब देवता घबराकर फिर भगवान विष्णु के समीप गये और अनेक प्रार्थना की तब भगवान विष्णु सब देवताओं के सहित गयासुर के शरीर पर सार हुये और स्वयं अपनी गदाघात से उसके शरीर को निःस्पन्द किया। मृत्यु के समय भगवान गयासुर से वर मांगने के लिये कहा तब गयासुर साष्टांग प्रणाम कर वर मांगा भगवन जहाँ मेरी मृत्यु हुई है मैं शिला होकर वर्त्तमान रहूँ और उस शिला पर हे भगवान आप के चरण कमलों की स्थापनां हो और जब तक सूर्य, चन्द्रमा और तारे इस पृथ्वी पर विद्यमान रहें तब तक ब्रह्मा: विष्णु और महेश्वर हमारे उस शिला शरीर पर अधिष्ठान करैं और महत्व यह हो कि जो उस शिला पर पिण्डदान और तर्पण करै उसके पितृगण सब पापों से मुक्त हो स्वर्ग में वास करैं। जिस दिन ऐसा न हो उस दिन इस क्षेत्र और शिला का नाश हो। महाराज इस क्षेत्र का नाम गया क्षेत्र हो। वरदान देते ही भगवान ने उसके मस्तक पर अपने चरण कमल को स्थापित किया देखते देखते उसका शरीर शिला रुप में परिणित हुई ॥ १४ ॥

## पन्द्रहवाँ अध्याय

पुरातन काल में गय नामक राजा ने गया जी में अनेक यज्ञ किया अन्नदान द्रव्यदान बहुत किया। उसके यज्ञ से सन्तुष्ट होकर श्री महा विष्णु गदाधर सुप्रसन्न होकर वरदान दिया यह पुरी तेरे नाम से प्रसिद्ध हो। तब से इस पुरी का नाम गया हो गया।

अथवा--त्रिपुरासुर के पुत्र गयासुर बहुत बलवान था इसकी माता पतिव्रता प्रभावती दैत्यगुरु शुक्राचार्य से वेद पढ़ कर उग्र तपस्या किया, तपश्चर्या से सन्तुष्ट होकर श्री भगवान विष्णु वरदान दिया और शरीर को परम पवित्र बनाया। तब ब्रह्माजी गयासुर के समीप आकर उससे यज्ञ के लिए उसका विशाल शरीर माँगा। परम धार्मिक पदार्थ परायण गयासुर ने अपना शरीर यज्ञ के लिए दे दिया, तदनन्तर यज्ञ किया। यज्ञ प्रारम्भ होते ही गयासुर का शरीर डोलने लगा सब देवता भगवान के समीप गये और अनेक प्रार्थना किया। तब भगवान अपनी गदाघात से उसके शरीर को निस्पन्द किया। मृत्यु के समय भगवान ने गयासुर से वर मांगने कहा तग साष्टाङ्ग प्रणाम कर मैं शिला होकर वर्तमान रहू और उस शिला पर हे भगवान आप के चरण कमल की स्थापना हो और जब तक सूर्य चन्द्रमा नक्षत्र रहे तब तक ब्रह्मा महेश्वर सहित

विष्णु हमारे उस शिला शरीर पर अधिष्ठान करे और मेरे नाम से ही क्षेत्र हो वरदान देते ही देखते देखते ही उसका शरीर शिला रुप में परिणत हुई उस के मस्तक पर चरण स्थापित किया ॥ १५ ॥

## सोलहवाँ अध्याय

वही जन्मांतर में दैत्य शिरोमणि विरोचन का पुत्र बलि चक्रवर्ती नाम से सुप्रसिद्ध है, ऐसे पुरातन महर्षि वेदव्यास से विदित होता है। भृगृऋषि कुछ क्षेत्र में सौ अश्वमेध किया। सौ अश्वमेध करने से इंद्र का स्थान मिलता है, दैत्यगुरु शुक्राचार्य के कृपा से परम शूर हो गये। तपस्या से और गुरुकृपा से त्रैलोक्य का राज्य सम्पादन किया। सब देव श्री ब्रह्मा जी सहित भगवान के शरण गये तब श्रीहरि कश्यप ऋषी से अदिति नामक देवमाता में अवतार लिया। बटु रूप धारण करने से वामन रूपी परमात्मा यज्ञ स्थान में आ गये। बलि चक्रवर्ती तीन चार भूमि याचना किया। तपस्वी ब्रह्मचारी देख के परम सन्तुष्ट होकर सत्पात्र में सर्वस्व दान करने को इच्छा हो गई और दान दिया।

भक्तकल्पद्रु म श्रीहरि त्रिविक्रम रूप धारन करके एक पाद से भूमि दूसरे से अन्त रिक्ष आक्रमन कर के तिसरे पाद का स्थान कहा है ऐसे पूछने पर हे भगवन् मेरे शिर पर चरण कमल रखो ऐसा प्रार्थना किया। भक्त शिरोमणि चक्रवर्ती बलिराज को सर्वस्व दान देने से सुप्रसन्न होकर भगवान भक्त वत्सल प्रभु उसके द्वारपाल हुए और उसी के सर्व मनोरथ पूर्ण किया दूसरे मन्वन्तर में इन्द्र पदवी दे दिया। जन्मान्तर देके गया क्षेत्र में गयासुर के शिर पर चरण कमल स्थापना कर मनोरथ पूर्ण किया ॥ १६ ॥

गया महात्म्य समाप्त

## भजन

रमापति रमण करो हृदय कमल माहीं ॥ टेक० ॥ विनय करू बारबार चरण कमल माहीं। केवल इक भक्ति चहौ और कछुक नाहीं ॥ रामापति ॥ नाम सुमरि सन्तन भव सिन्धु पार जाहीं। छूट जात मोह कर्म संशय कछु नाही ॥ रमापति ॥ योगी मुनि ध्यान धरत बैठी वृक्ष छाहीं करि प्रभु सुयश गान जन अघाहीं ॥ रमापति रमण को ॥

## —गया गाईड—

गया ( प्राचीन समय में, द्वापर युग अन्त तक यह देश मगध देश के नाम से विख्यात था। उस समय यहां का राजा जरासन्ध था ) हिन्दुओं का परम पवित्र और प्रधान तीर्थ है। यहाँ पितरों का पिण्ड दान दिया जाता है। गया की शोभा उसके चारों ओर की शैलमाला से है। रामशिला, प्रेतशिला, ब्रह्म-

योनी आदि पहाड़ों से गया घिरी हुई है। सभी पर्वतों पर मंदिर बने हुए हैं। रामशिला ३७२ फीट ऊँची है। इस पर्वत पर चढ़ने के लिये सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। प्रेतशिला पर जगत् विख्यात महारानी अहिल्या बाई का बनवाया हुआ मन्दिर है बौद्ध साहित्य में ब्रह्मयोनी पहाड़ का वृत्तान्त प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि गौतम बुद्ध के स्मृति को चिरस्थायी करने के लिये सम्राट अशोक ने इस पर्वत के शिखर पर एक स्तूप बनवाया था किन्तु आज उसका चिह्न भी

भगवान बुद्ध तपस्या के रूप में

नहीं है। फल्गू नदी गया तीर्थ के चरणों को धोती हुई दक्षिण उत्तर की ओर बहती गई है। यह पहाड़ी नदी है इसमें पानी के अतिरिक्त केवल मरुभूमि की तरह बालू को रेत ही दिखाई देता है। इसके तट पर अनेक देव मंदिर हैं। सब से प्रधान मंदिर विष्णुपद का है। इस मंदिर को अहल्याबाई ने निर्माण किया था। बुकानन साहब का कथन है कि महरानी अहिल्याबाई ने गया में मंदिर बनवाने के लिये १६ लाख रुपये खर्च किये थे जिस में ९ लाख रुपया

विष्णुपद के मंदिर में खर्च हुआ और बाकी रुपया ब्राह्मणों को दान दिया गया। गया में अनेकानेक शिला लिपियाँ मिली हैं जिस से गया की प्राचीनता और ऐतिहासिकता प्रमाणित होती है। यह इतिहास प्रसिद्ध है कि गया में सनातन धर्म व बौद्ध धर्म की टक्कर हुई थी।

गया स्टेशन ई० आई० रेलवे के ग्रांड कार्ड लाइन पर अवस्थित। स्टेशन का नाम गया जंक्शन है। यहाँ आप के लिए हर तरफ से लाइन है। मोगलसराय, पटना, किऊल, आसनसोल, और गोमा जंक्शन से यहाँ मुसाफिर आ-सकते हैं। मोगलसराय और गया जंक्शन से आने वाले यात्रियो को सुभीता है। पटना जंक्शन के बाद ही पुनपुन स्टेशन है और मोगलसराय जंक्शन से आने में सोन ईस्टबैंक स्टेशन के बाद ही पोवरगंज स्टेशन है। यहां भी पुन-पुन नदी मिलती है। तात्पर्य यह है कि पुनपुन नदी में ही पहला पिंड है। दोनों जगहों में राय सूर्यमल बहादुर की धर्मशाला है। गया स्टेशन शहर में है। यहाँ हर तरह की सवारियां मिलती हैं। धर्मशाला यात्रियों के ठहरने के के लिए स्टेशन के ठीक सामने रायबहादुर सुर्यमल झुन झुन वाले का धर्मशाला है। इन्हीं की बनवाई हुई एक और भी धर्मशाला है जो स्टेशनसे एक मील दूर है जो बड़ा धर्मशाला के नाम से विख्यात है। स्टेशन से इन धर्मशाला में जाने के लिए म्युनिस्पल्टी द्वारा गाड़ी का किराया बंधा हुआ है। यात्रियों को गयावाल ( पंडा ) लोग भी अपने उतारे में ठहराया करते हैं। स्टेशन पर उनके आदमी रहते हैं जो अपने अपने पंडों के नाम पुकारा करते हैं। धूर्त और बद-माश प्रायः सभी तीर्थ स्थानों में पाये जाते है इनसे यात्रियों को सचेत रहना चाहिये। ये दुष्ट, पंडों का नौकर बन यात्रियों को दूसरे पंडो और अन्य जात के यहाँ ले जाया करते हैं और उनसे सुफल दिलाकर उनका काम बिगाड़ देते हैं।

प्राकृतिक दृश्यः—यह शहर पहाड़ों की खाड़ी में बसा हुआ है। रामशिला पर्वत की चोटी पर से इसका अति सोहावन दृश्य दिखाई पड़ता है। यह नगर दक्षिण की ओर ऊँचा और उत्तर की ओर ढाल हैं इस जिले में कई नदियां बही हैं पुनपुन, फल्गु, जमुने, मोरहर इत्यादि सभी नदियां दक्षिण से आई हैं हैं और उत्तर की ओर बह गई हैं। इस जिले के दक्षिण सिमाने पर हजारीबाग का जिला प्रारम्भ हो जाता है इसी जगह पर एक पहाड़ है जिसको आज कल लोग कौलेश्वरी पहाड़ कहते हैं। इसकी चोटी पर कौलेश्वरी देवी की स्थापना है। इसी पहाड़ पर द्वापर युग के अन्त में लगभग ४६०० वर्ष पूर्व राजा विराट का नगर था। पुराने किले की सीमा बन्दी का चिन्ह अभी तक दृष्टिगोचर होता है। इसी स्थान पर कौरवों के साथ विराट का युद्ध हुआ था! पांडव लोगों ने

यहाँ १२ वर्षों तक अज्ञात वास किया था। अर्जुन ने बाण मारकर इस पहाड़ के उपर जहां पर जल निकाला है वह स्थान (कुंड) अभी तक वर्तमान है, उसमें जल अगाध है।

वायुपुराण तक अन्य ग्रंथों में लिखा है कि पुरखाओं की आत्मा को उद्धार करने के लिए इस स्थान में यानी गया में पिंडदान देना चाहिये पिंडदान के लिये यहाँ ४५ वेदियाँ हैं। सर्वोपरि विष्णुपद है। प्राचीन समय में यहाँ एक वर्ष में श्राद्धसमाप्त होता था। पिंडदान करने के स्थानों की संख्या भी ३६० थी, प्रति दिन एक एक वेदी पर पिंडदान दिया जाता था। वर्तमान समय में ४५ वेदियों के अतिरिक्त सब वेदियाँ लोप हो गई हैं।

## विष्णुपद मन्दिर

यहाँ जाने के लिये रामसागर नई सड़क पैदल जाना पड़ता है और प्रसस्त रास्ता भी नहीं हैं। घोड़ा, गाड़ी मोटर इत्यादि सड़क से होते हुए स्मशान घाट तक जाता है, यह स्थान विष्णुपद मंदिर के सटे दक्षिण ओर है। श्री विष्णु भगवान के मंदिरको विख्यात नामी इंदौर की महारानी श्रीमती अहल्याबाई ने सन् १७६६ में बनवाई है। मंदिर की बनावट देखने योग्य है। इस जाति के पत्थर का इतना बड़ा मंदिर किसी जगह नहीं हैं। सभी मंदिर बहुत बड़ा है। इसमें पानी का बूंद हर समय टपकता रहता है। ऐसी दंत कथा है कि यहाँ खड़ा होकर जिस तीर्थ स्थान का नाम ले हाथ फैलाने पर एक दो बूंद पानी हाथों पर टपक जाता है। मंदिर श्री विष्णु भगवान के चरण चिह्न को रक्षित करते हुये बनवाया गया है। चरण चिह्न १२ इंच का है, इसकी अंगुलियाँ उत्तर की ओर हैं। इस चिह्न के चारों तरफ एक फुट ऊँचा मुड़ेरा बना हुआ है। यह मंदिर फल्गु मधुश्रवा नदी के तट पर बना हुआ है। पूरब की ओर सदर द्वारा के सामने श्री हनुमानजी की विशाल मूर्ति है। उत्तर की ओर श्री महारानी अहल्याबाई जिनका मन्दिर बनवाया हुआ है उनकी प्रतीमा बनी हुई है ( पश्चिम तरफ पिछुत का फाटक है। )

## सूर्य कुण्ड

विष्णु पद मंदिर से सूर्य कुण्ड उत्तर पश्चिम के कोने में एक बड़ा तालाब है। इसके चारों तरफ पत्थर के उँचे दीवार हैं। इसके दक्षिण की ओर दक्षिण मानस और बीच में कनखल और उत्तर के हिस्सों में उरिंची कुण्ड के सामने पश्चिम की ओर सूर्य भगवान की चतुर्भुज मूर्ति वर्तमान है। यहां छठव्रत का भार मेला चैत्र और कार्तिक मास के षष्टि शुक्ल पक्ष को लगता है।

## उत्तर मानस

सूर्यकुण्ड के दक्षिण ओर का रास्ता कृष्ण द्वारिका होते हुए दक्षिण दरवाजा से बाहर ब्रह्मसरोवर तालाब को चली गई। उत्तर की सड़क सीधा उत्तर मानस

से आगे चौक से होते हुए रामशिला पहाड़ को गई है। सूर्यकुंड से उत्तर मानस प्रायः एक मील के पड़ता है। साहगञ्ज शहर के पास उत्तर मानस तालाब है। यहां भी पिंडदान दिया जाता है।

## दु:खहरनी देवी

साहगञ्ज चौक से करीब ३ फर्लांग सीधा उत्तर जाने से सड़क पर एक फाटक मिलता है यह जगह दुःखहरनी देवी के नाम से विख्यात है। उस फाटक पर देवी की मूर्ति है।

## सीता कुण्ड राम गया

विष्णुपद मंदिर के ठीक सामने फल्गु नदी है उसके उस पार एक मंदिर है उस में काले पत्थर का हाथ बना हुआ है। यह अयोध्या के राजा श्रीरामचंद्रजी के पिता का हाथ है। श्रीराम लछमण के वन चले जाने पर दशरथजी की मृत्यु हुई
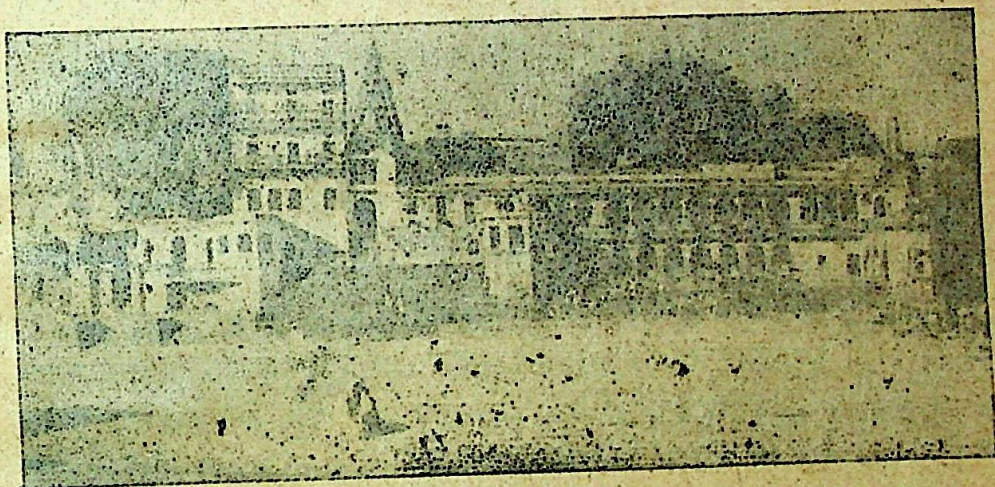
गदाधर घाट

और सीताजी ने यहाँ दशरथजी की प्रेतात्मा को बालू का पिण्ड दिया था। फल्गु के झूठ बोलने पर सीताजी ने यहीं उसको श्राप दिया था जिससे यह अन्तः शलिला हो गई। अक्षयवट को उसकी सत्यवादिता के लिये अक्षय होने का वरदान दिया।

## रामशिला

दुःख हरणी देवी से प्रायः एक मील उत्तर रेल के पुल के नीचे से होकर राम शिला को रास्ता गया है पुल पार होतेही काकवली देवी का मंदिर है, यहाँ पर भी पिण्डदान दिया जाता है। विष्णु पद मन्दिर से यह स्थान तीन मील की दूर पर है। इस पहाड़ पर चढ़ने के लिये टिकारी नरेश ( रण बहादुर सिंह )

ने ३५७ सीढ़ियाँ बनवाई हैं। पहाड़ पर पातालेश्व और श्रीराम लक्ष्मण का मन्दिर है दोनों अलग है।

## प्रेत शिला

यह पहाड़ रामशिला पर्वत से ३ कोसयानी६ मील पश्चिम को है। पहाड़ के नीचे ब्रह्मकुण्ड तालाब है इसके घाट पक्के हैं। यहाँ स्नान तर्पण कर पिंडा देते हैं। प्रेतशिला में भी पिंडादान दिया जाता है। यह पिंडा देने से मृतक, प्रेत योनी से उद्धार हो जाता है। यहाँ के पण्डा धामी (प्रेतिया) कहाते हैं। पिंडा पहले प्रेतशिला में दिया जाता है। यहाँ से होकर रामशिला में दिया जाता है। अपघात मृत्यु होने पर प्रेतशिला में पिंड देना चाहिए। रायबहादुर मल्ल झुनझुन वाले का एक छोटा धर्मशाला यहाँ भी हैं। पहाड़ पर चढ़ने के लिए ४०० सीढ़ियाँ हैं। ऊपर मंडप के नीचे चट्टाने पर ३ स्वर्ण रेखाएँ हैं, जिसे लोग ब्रह्मा की लिपि बताते हैं।

## अक्षयवट

विष्णुपद और ब्रह्मयोनी के बीच में अक्षयवट है। इसीके सटे पश्चिम ओर रुक्मिणी तालाब है। यहाँ आखिरी पिण्डा दिया जाता है। इसी वृक्ष के नीचे पण्डा लोग यात्रियों ( पिंडदान देने वालों ) को सुफल देते है। प्रवाद है कि यह युग त्रेता युग से वर्त्तमान है।

## मंगलागौरी

अक्षयवट से कुछ पूरब आदिमाया मङ्गलागौरी का मन्दिर हैं। क़रीब १२५ सीढ़ी चढ़ने पर आदिमाय। मङ्गलागौरी ( स्तन ) का दर्शन होता है। पाठादि और अनुष्ठान करने के लिए इसी से सटा हुआ मंडप बना हुआ है। इस मन्दिर के उत्तर ओर जनार्दन भगवान का मन्दिर है।

## ब्रह्मयोनि

यह पहाड़ विष्णु पद से १ मील की दूरी पर है इस पहाड़ पर चढ़ने के लिए महाराज इन्दौर की बनवायी हुई ४२४ सीढ़ियाँ हैं। पहाड़ के ऊपर दो संकीर्ण गुफाये हैं जो मातृयोनी के नाम से प्रसिद्ध हैं। जन श्रुति है कि इन गुफायों के अन्दर से पार निकल जाने से आवागमन से मुक्त हो जाता। दन्त कथा है कि वर्ण शंकर इसके आरोपार नहीं हो सकता।

## बुद्धगया महात्म्य

### प्रारम्भ

गया का उपनगर बुद्ध गया है। बौद्ध लोग बुद्धकी स्मृति के कारण चार ( यह स्थान गयासे ७ मील दूर निरञ्जना नदी के तट पर अवस्थित है। इसका प्राचीन नाम

गयातीर्थ का नकशा
ब्रह्मयोनी
विष्णु पद
प्रेतशिला
गयासुर
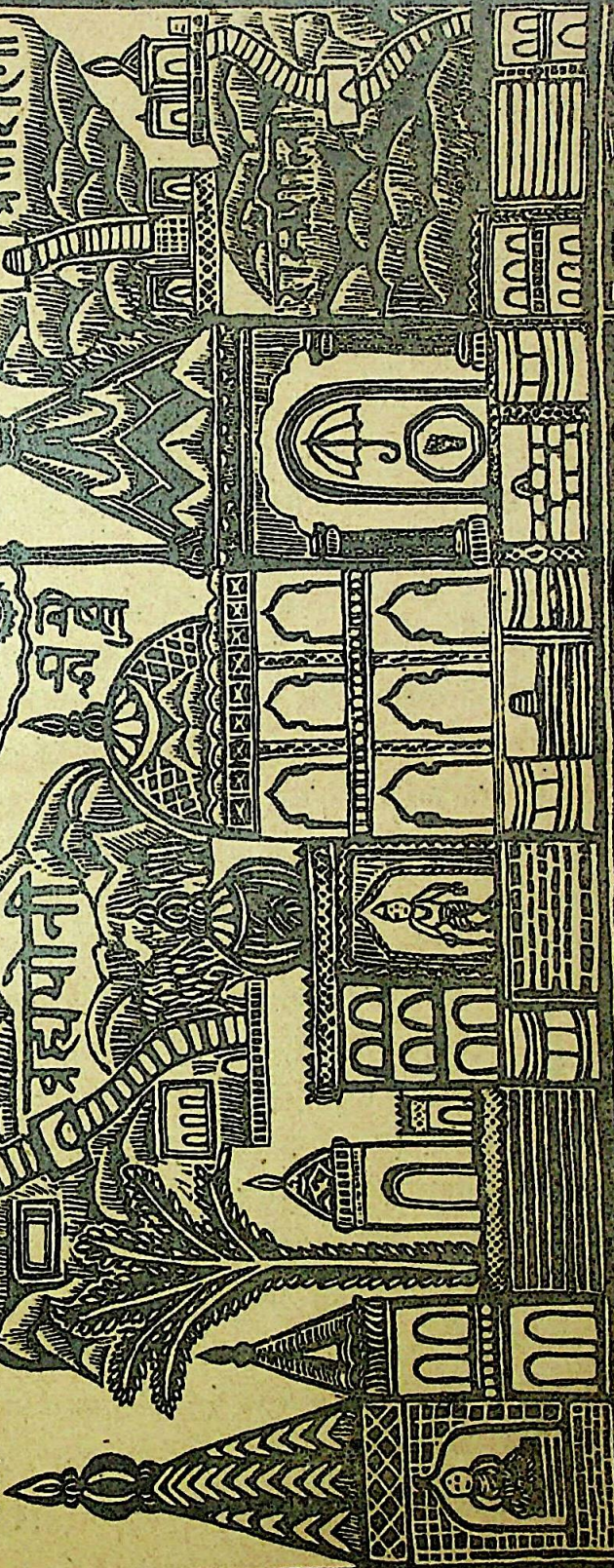
उरूविल्व था) स्थानोंको पवित्र मानते हैं (१) कपिलवस्तु जो बुद्ध का जन्म स्थान है (२) उरुविल्व जहाँ बुद्ध ने सन्यास लिया था (३) वाराणसी जहाँ से बुद्ध ने धर्म का प्रचार करना आरम्भ किया और (४) कुशी जहाँ से बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया। बुद्धदेव मुक्त होये की इच्छा से, राज्य, राजभवन तथा कुटुम्बियों को छोड़ सन्यासियों में ज्ञानोपार्जन के लिए लालायित होकर घूमने लगे। किन्तु उनकी हृदय की तृष्णा कहीं भी तृप्त न हुई जिससे वे बुद्धगया में पहुँचे। उरुविल्व ग्राम में उन्होंने षट वार्षिक व्रत का अनुष्ठान किया। तब भी वे शान्ति-लाभ न कर सके। तब उन्होंने निरजना के जल में स्नान किया और ठंढे हो सुजाता नाम की लड़की के दिये हुए भोजन से तृप्त हो बोधीद्रुम के नीचे प्राण तक त्याग देने का संकल्प कर, साधना में प्रवृत हो दिव्य-ज्ञान प्राप्ति करने में समर्थ हुए। यही उरुविल्व माने बुद्ध गया है। बुद्धगया का मन्दिर एक मञ्जिल तक भूगर्भ में था केवल ऊपर का कलश दिखायी देता था। १८८१ई० में गवर्नमेंट की सहायता से इसका उद्धार किया गया। मन्दिर की ऊँचाई १७० फीट है। मन्दिर के पश्चिम एक पीपल का पेड़ है जिसे लोग सतयुग के वृक्ष की शाखा कहते हैं। इसी स्थान पर शक्य मुनी (बुद्ध) ने ३९ रोज तक निराहार पूरब मुख बैठकर तपस्या की और निर्वाण मुक्ति प्राप्त किया। (वज्रासन देवी भी इसी वृक्ष के समीप है) इस वृक्ष के दक्षिण हिन्दू यात्री लोग पित्रों को उद्धर के लिए पिण्डदान करते हैं। आज भी उसी स्थान पर बुद्ध की मूर्ति स्थापित है। शाक्य मुनि बुद्धदेव की विशाल मूर्ति पूर्वार्ध होकर बैठी हुई है। मूर्ति पर सोने का मुलम्मा है। इस मन्दिर को बने लगभग २३०० वर्ष से अधिक हो गये। बौद्ध धर्मावलम्बी यहाँ बराबर आया करते हैं। मन्दिर से दक्षिण बुद्ध कुण्ड है। कदाचित ऐसा प्रतीत होता है कि शक्यमुनि इसी कुण्ड में स्नान किया करते थे। इसी मन्दिर से कोई १५० कदम पर किसी रानी का बनवाया हुआ जगन्नाथ जी का मन्दिर है, उस मन्दिर का कुल खर्च उसी रानी की ओर से हुआ करता है। बुद्धगयाके महन्थ महाराज एक सज्जन पुरुष हैं। आपका स्वभाव बहुत सरल है। यही गद्दी श्री जगद्गुरु शंकराचार्य की है तब उन्होंने बौद्ध धर्म पर विजय प्राप्त किया था उस समय से है। जिसकी इच्छा हो महन्थजी से मिल सकते हैं। बुद्धदेव का मन्दिर भी महन्थ जी के अधीन है। सनातन धर्म के अनुसार यहाँ भी पिण्डदान होता है बुद्धगया नाम की एक छोटी बस्ती मंदिर के समीप है। यहाँ खाने पीने की सब वस्तुयें, दूध, घी सब कुछ मिलता। महन्थ जी की ओर से सदाव्रत भी बटता है। यहाँ थाना और डाकघर दोनों है।

गया में आकर करो श्राद्ध पित्र को स्वर्ग पठाने वाले।

गया है अति उत्तम स्थान, जिसको जानत सकल जहान,
आकर करो पित्र का दान पुत्र सपुत्र कहाने वाले॥

पित्र पच्छ आसिन मास सुहाये पित्रन सबके आस लगाये,
जिनके वंशज आ धाये, श्राद्ध तरपना के कराने वाले।

पिण्डा देते मन चित लाय लेवे पित्र प्रेम से आय,
करते वास स्वर्ग में जाय जय जय कार मनाने वाले॥

पिण्डा दिन्ही जानकी माय लिन्हीं दशरथ जी हरषाय,
देखो गया महात्म्य भाई सनातन धर्म कहाने वाले।

विष्णु पद अद्भुत स्थान आकर करो चरण का ध्यान
पूजन करो विष्णु पद जान चोला सफल कराने वाले॥

जिनके पुत्र पिण्ड नहीं देते उनका पित्र महादुःख भरते,
सबके पिण्ड देख तरसते वे पुत्र कहाने वाले॥

यदुनाथ हमारो नाम राजा पाकर मेरो ग्राम,
मुजफ्फरपुर जिला सरनाम गया महिमा सुनाये वाले॥इति॥

## विष्णु गदाधर भजन

धन धन विष्णु गदाधर नाम पित्रन मुक्त कराने वाले।

तुम्हारी महिमा है अपार जाको वेद न पावे पार करें,
पित्रन सबके उधार पापी पाप नसाने वाले॥ धन।

जो कोइ विष्णु पद आय पिण्डा देते हैं हरषाय,
उनके पित्र स्वग को जाय यम का फन्दा छोड़ाने वाले॥धन॥

जो कोई दर्शन तुमरी पावे उसका पाप सबे दह जावे!
अन्त में स्वर्ग धाम को पाये जीवन सफल कराने वाले।

बाबूलाल चित्रकार सबसे कहते बारम्बार,
है यह तीर्थ सबों को सार आवागमन मिटाने वाले॥धन॥

# गयाजी के सब तीर्थों का नाम

## वेदी श्राद्ध करने का स्थान

| तिथि | स्थान | ( संख्या | तिथि ) | स्थान | संख्या |
|---|---|---|---|---|---|
| १८ | पुनपुना पांवपूजा और श्राद्ध | १ | ७ | सूर्यपद श्राद्ध | २८ |
| १५ | फल्गुस्नान और श्राद्ध | २ | | चन्द्रपद श्राद्ध | २९ |
| | ( खीर भात का पिण्डा ) | | | गणेशपद | ३० |
| १ | ब्रह्मकुण्ड यव चूर्ण का पिण्ड | ३ | | संध्याग्निपद | ३१ |
| | प्रेतशिला श्राद्ध | ४ | | आवसथ्याग्निपद | ३२ |
| | रामशिला श्राद्ध | ५ | | दधीचिपद | ३३ |
| | रामकुण्ड श्राद्ध | ६ | ८ | कंवपद | ३४ |
| | काकवलि तीन पिण्डी | ७ | | मातंगपद | ३५ |
| | ( काक, श्वान यम ) | | | क्रौंचपद | ३६ |
| २ | पंचतीर्थ उत्तरमानस श्राद्ध | ८ | | अगस्त्यपद | ३७ |
| | उदीची श्राद्ध | ९ | | इन्द्रपद | ३८ |
| | कनखल श्राद्ध | १० | | कश्यपपद | ३९ |
| | दक्षिणमानस श्राद्ध | ११ | | गजकर्णपद दूध तर्पन अन्नदान | ४० |
| | जिह्वालोल श्राद्ध | १२ | ९ | रामगया श्राद्ध | ४१ |
| | गदाधरजी को पंचरत्नदान | १३ | | सीताकुण्ड ( बालू का पिंडा ) | ४२ |
| ३ | सरस्वतीस्नान पंचामृतस्नान | १४ | | सौभाग्यवायनदान | |
| | मातङ्गवापी श्राद्ध | १५ | १० | गयासिर श्राद्ध | ४३ |
| | धर्मारण्यकूप कूप के मध्य में श्राद्ध | १६ | | गया कूप | ४४ |
| | बोधतरु श्राद्ध ( बोधगया ) | १७ | | मुण्ड पृष्ठा | ४५ |
| ४ | ब्रह्म सरोवर श्राद्ध | १८ | ११ | आदिगदाधर | ४६ |
| | काकवलि श्राद्ध | १९ | | धौतपद श्राद्ध चांदीदान | ४७ |
| | तारक ब्रह्मा का दर्शन और | | १२ | भीमगया | ४८ |
| | आम्रसिंचन | २० | | गौ प्रचार | ४९ |
| ५ | रुद्रपद श्राद्ध | २१ | | गदालोल श्राद्ध | ५० |
| | विष्णुपद श्राद्ध | २२ | १३ | वैतरणी श्राद्धगोदान दूध तर्पण | ५१ |
| | ब्रह्मपद श्राद्ध | २३ | १४ | विष्णु भगवान का पंचामृत पूजन | ५२ |
| ६ | कार्तिकपद श्राद्ध | २४ | १५ | अक्षयवट श्राद्ध खीर का पिण्डा | ५३ |
| | दक्षिणाग्निपद श्राद्ध | २५ | | षोडशदान सुफल | |
| | गार्हपत्याग्निपद श्राद्ध | २६ | १ | गायत्री घाट दही का पिण्डा | ५४ |
| | आहवनी याग्निपद श्राद्ध | २७ | | आचार्य की दक्षिणा की बिदाई | |

मुद्रकः—सेवालाल बम्बई प्रिंटिंग काटेज बाँस फाटक, बनारस ।

# भारत की तीर्थ यात्रा

यही एक पुस्तक है जो हिन्दुओं के समस्त तीर्थों की कहानी सुनाती है,
हाथ से ऐसा मौका न जाने दें, पीछे पछताना पड़ेगा शीघ्र खरीदें।

प्रकाशक—बाबू माधोप्रसाद गौरीशंकरप्रसाद बुक्सेलर,
पचमहला, गया।

मुद्रक—बम्बई प्रिंटिंग काटेज, बांसफाटक, बनारस।